THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

दर्द - क्या हमें इस के साथ जीना होगा?

Pain – must we live with it?

The Christian Science Monitor
May 17, 2007

कुछ वर्ष पहले मैंनें दर्द–निवारण कार्यक्रमों के बारे में एक दूरदर्शन प्रदर्शन देखा जो लोगों की चिरस्थायी दर्द को नियन्त्रण में रखने में सहायता करने के लिए बनाया गया था। चाहे इन कार्यक्रमों के लक्ष्य निस्संदेह पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए बहुत अधिक प्रेम से प्रेरित थे, ये दर्द के साथ जीने का रास्ता खोजने को ही इस से निकलने का एकमात्र रास्ता मानते हैं।

हम शायद स्वयं को बाइबल में यिर्मयाह की तरह महसूस करें, जब उस ने कहा, "मेरा दर्द निरन्तर क्यों है और मेरा जख्म लाइलाज, जो ठीक नहीं होना चाहता?" (यिर्मयाह 15:18), चिरस्थायी दर्द से मुक्त होना सम्भव है। प्रार्थना द्वारा **परमेश्वर** से मार्गदर्शन करने को कहना हमारी सोच को प्राकृतिक तथा निरन्तर समन्वय की ओर विस्तृत कर देता है जो कि **परमेश्वर** के द्वारा संचालित होने के साथ आता है। यह यहाँ धरती पर एक स्वर्गिक अधिकार है।

जीसस का उद्देश्य सारी मानवता को प्रकाशित करना था कि स्वर्ग का साम्राज्य यहाँ है और क्रिश्चियन सायँस उस तथ्य की व्याख्या करती है यह समझाते हुए कि स्वर्ग **मन***, **परमेश्वर** की एक दिव्य अवस्था है। सोच की यह दिव्य अवस्था, यहाँ और अभी सब के लिए सम्भव है।

आत्मा के इस साम्राज्य में सारे सही विचार तथा विशेषताएं बिना एक दूसरे से टकराए बिना घर्षण, दुर्घटना या किसी प्रकार की पीड़ा के, समन्वय में घूमते हैं। इस साम्राज्य में, चेतना की इस अवस्था में कुछ भी दबाव डालने या तनाव देने के लिए नहीं है और न ही दबाव या तनाव महसूस करने के लिए कुछ भी है। कोई भी निरन्तर दर्द, धड़कन या चुभन नहीं होती।

परमेश्वर के आशीषित बच्चे के तरह, मानव की पहचान बिना पश्चाताप के है और उस में भरने के लिए पीड़ा का कोई जुर्माना नहीं है। स्वर्ग में सब कुछ सम्पूर्णता से एक दूसरे के अनुकूल होता है तथा अपनी–अपनी जगह पर है। दर्द इन आध्यात्मिक तथ्यों में बाधा नहीं डाल सकता, न ही इन में देरी कर सकता है या न ही इन्हें नष्ट कर सकता है।

क्योंकि समन्वय **परमेश्वर**, दिव्य **सिद्धांत** से आता है, यह सेहत को सम्मिलित करते हुए हमारे जीवन में हर चीज़ का आध्यात्मिक कानून है।

कुछ वर्ष पहले मैं अपनी टाँगों तथा कमर में निरन्तर दर्द महसूस कर रही थी। **परमेश्वर** की ओर तहे दिल से मुड़ने पर, मैंने आरम्भ किया एक–एक विचार में – दावा कर के कि जो कुछ मेरे जीवन में प्रतिरूपित था, **परमेश्वर** द्वारा नियन्त्रित, प्रेरित तथा निर्देशित था।

एक पल के लिए भी मैंने अपने अस्तित्व के समन्वय को नहीं छोड़ा। मेरे जीवन का केवल यही संदर्भ था। साथ ही मैं प्रतिक्रिया या शिकायत न करने के लिए, अपितु इस सत्य के लिए आभारी रहने के लिए अधिक जागरूक थी ताकि मैं अपनी सोच को इन आध्यात्मिक तथ्यों के साथ पंक्तिबद्ध करूँ तथा मिलाए रखूँ।

इस समाचार पत्र की संस्थापिका मेरी बेकर एडी, ने अपनी सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तक 'सायँस एण्ड हैल्थ विद् कि टू दि स्क्रिपचर्स'** में इन सान्तवनादायक तथा पुनः आश्वासन देने वाले शब्दों को लिखा जिन्होंने मेरी बहुत अधिक सहायता की : "अनश्वर **मन** शरीर को बेहतरीन ताज़गी तथा स्वच्छता के साथ संपोषित करता है, इसे सोच के सुन्दर रूप देते हुए, इन्द्रियों के उन कष्टों को नष्ट करते हुए, जो हर दिन हमें कब्र के ज़्यादा नज़दीक ले जाते हैं।" (पृष्ठ 248) दर्द गायब हो गया।

अगर ऐसा लगे जैसे कि सुरंग के अन्त में प्रकाश नहीं है, यह **परमेश्वर** की इच्छा नहीं है कि उसकी रचना पीड़ित हो। दिव्य **प्रेम** का स्वर्ग कहीं भविष्य में नहीं है। यह एकदम निकट है – यहाँ और अभी, जानने तथा महसूस करने के लिए।

परमेश्वर *पोंछ देगा*
उनकी आँखों से सारे आँसू,
और वहाँ फिर मृत्यु नहीं होगी,
न ही दुख होगा, न ही रोना, न ही वहाँ
फिर कभी दर्द होगा,
इसलिए कि पुरानी बातें
बीत चुकी हैं।

प्रकाशित वाक्य 21:4

* *जो शब्द गाढ़े अक्षरों में लिखे हैं, वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।*

For this translation in English and other translations in Hindi, please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.